ज्योतिष शास्त्र

ज्योतिष शास्त्र हमारे वेदों का ही अंग है अर्थात जितने प्राचीन हमारे वेद हैं उतना ही प्राचीन यह ज्योतिष शास्त्र है अर्थात ज्योतिष शास्त्र वृक्ष है और वेद उसकी जड़े हैं ज्योतिष शास्त्र की रचना में हमारे प्राचीन ऋषि यों का का हे मुख्य रूप से योगदान है यह प्रकाश देने वाला शास्त्र है यह प्रकाश के संबंध में ज्ञात कराने वाला शास्त्र है ज्योतिष शास्त्र गणित और फलित दो भागों में है ज्योतिष के गणित पक्ष में सूर्या दे ग्रहों के गति का वर्णन होता है नक्षत्र राशि आदि का वर्णन होता है गणित पक्ष के द्वारा ही किसी भी मनुष्य के जन्म के अनुसार उसकी कुंडली बनाई जाती है और दूसरा पक्ष फलित पक्ष है फलित पक्ष के द्वारा हम मनुष्य के जीवन में उसके भूतकाल में कैसा समय रहा है और मनुष्य का वर्तमान कैसा है और मनुष्य का भविष्य कैसा होगा यह फलित ज्योतिष के द्वारा ही जाना जा सकता है एवं फलित ज्योतिष के द्वारा वर्तमान और भविष्य में आने वाले संकट से निवारण कैसे होगा यह भी जाना जा सकता है विशेषकर के मानव जीवन पर सूर्या दी ग्रहों का पूर्ण प्रभाव होता है जिसके कारण मनुष्य को सुख-दुख आदि प्राप्त होते हैं शारीरिक कष्ट भी ग्रहों के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं ज्योतिष शास्त्र द्वारा हम अपने जीवन में आने वाले कष्टों को दूर कर सकते हैं कम कर सकते हैं चाहे वह कष्ट आर्थिक हो शारीरिक और मानसिक हो निश्चित रूप से इस विषय द्वारा मानव जीवन में आने वाले कष्टों को दूर कर पाएंगे विशेष रुप से ग्रह नक्षत्र राशियों द्वारा उत्पन्न हुए शारीरिक कष्ट रोग बीमारियों का समाधान हम कर पाएंगे

मनुष्य के सभी परेशानियों के समाधान के लिए उनका जन्म तिथि जन्म समय और जन्म स्थान होना आवश्यक है इसके द्वारा मनुष्य के जीवन में शुभ अशुभ सभी अवस्थाओं को ज्ञात करके उसका समाधान किया जा सकता है

जन्मतिथि के अभाव में मनुष्य के हस्त रेखाओं का अध्ययन करके जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान पूर्ण रूप से किया जा सकता है एवं मानव जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए उनके भवन के वास्तु का अध्ययन करना पड़ता है उस भवन के मिट्टी का के शोधन किया जा सकता है जिसके द्वारा मनुष्य के जीवन में आने वाले समस्त परेशानियों का अध्ययन हो जाता है और उसका समाधान हो जाता है

इस प्रकार से सभी सेवाएं इस प्रकार की सभी सेवाएं हमारे यहां उपलब्ध हो जाएंगे